

**पर्यावरण प्रदूषण: प्रकार एवं संरक्षण**आशुतोष त्रिपाठी<sup>1</sup> एवं अजय कुमार पाल<sup>2</sup><sup>1</sup>विभागाध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग

पी0बी0 पी0जी0 कॉलेज, प्रतापगढ़ सिटी-232002, उ0प्र0, भारत

<sup>2</sup>प्रवक्ता, बी0एड0, शिवनाथ वर्मा स्मारक पी0जी0 कॉलेज देवनगर, सुलतानपुर-228001, उ0प्र0, भारत  
drashutoshtripathi6@gmail.com, ajaypal.pal086@gmail.com

प्राप्त तिथि-30.06.2017, स्वीकृत तिथि-21.09.2017

**सार-** प्राकृतिक पर्यावरण में दूषित पदार्थों के समावेश से प्रदूषण होता है जो हमारे जीवन पर बुरा प्रभाव डालता है। आजकल विश्व पर्यावरण प्रदूषण से समस्याग्रस्त है जो प्रतिवर्ष बढ़ता ही जा रहा है। पर्यावरण में प्रदूषण मुख्यतः पाँच प्रकार के प्रदूषकों से होता है- वायु, जल, मृदा, ध्वनि एवं प्रकाश। प्रदूषण का हल तनुता है। पर्यावरण प्रदूषण को पुनः चक्रित, पुनः उपयोग, कचरा प्रबंधन, लघुकरण, रोककर, खाद बनाकर कम किया जा सकता है। पर्यावरण प्रबंधन में आधुनिक तकनीकों का उपयोग समस्या के नियंत्रण में प्रभावी हो रहा है।

**बीज शब्द-** पर्यावरण प्रबंधन, कचरा प्रबंधन, पुनः चक्रित, पुनः उपयोग, खाद।

**Environmental pollution: types and conservation**Ashutosh Tripathi<sup>1</sup> and Ajay Kumar Pal<sup>2</sup><sup>1</sup>Head, Department of Chemistry

P.B. P.G. College, Pratapgarh City-232002, U.P., India

<sup>2</sup>Lecturer, B.Ed., Shiv Nath Verma Smarak P.G. College, Devnagar, Sultanpur, U.P., India  
drashutoshtripathi6@gmail.com, ajaypal.pal086@gmail.com

**Abstract-** Pollution is the introduction of contaminants into the natural environment that causes adverse change. One of the greatest problem that the world is facing today is that of environment pollution, increasing with every passing year and causing grave and irreparable damage to the earth. Environmental pollution consists of five basic types of pollutants namely air, water, soil, noise and light. The solution of pollution is dilution. Environmental pollution can be controlled by recycling, reusing, waste management, mitigating, preventing and by making compost. Environmental management using modern technology seems to be effective in pollution control.

**Key words-** Environmental management, waste management, recycling, reusing, compost.

1. **प्रस्तावना-** प्राचीन समय के जगत में मनुष्य का स्वयं एवं ब्रह्माण्ड के बारे में ज्ञान, एक दूसरे के पूरक थे।<sup>1</sup> ज्ञान मनुष्य का सृष्टि के साथ एक सुदृढ़ और स्वस्थ बनाने का आधार है। इन दो प्रकार के ज्ञान को अलग मानने की वजह से आज विश्व के सामने कई चुनौतियाँ खड़ी हो गई हैं। प्राचीन ज्ञान के अनुसार मनुष्य के अनुभव में पाँच परतें आती हैं, यथा- पर्यावरण, शरीर, मन, अन्तर्ज्ञान और आत्मा। इसमें सबसे महत्वपूर्ण परत पर्यावरण की है। अगर हमारा पर्यावरण स्वच्छ और सकारात्मक है तो हमारे अनुभव की बाकी सभी परतों पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है और वे सन्तुलित हो जाती हैं।<sup>2,3</sup> सोने का अण्डा देने वाली मुर्गी की कहानी हमने सुनी ही है, प्रकृति भी सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी के समान है जो समय विशेष में अपनी क्षमता के अनुसार ही हमें अपना उत्पाद देने में सक्षम है यदि हम उसका सिर्फ दोहन करना चाहेंगे तो वह नष्ट हो जायेगी। इस भूमण्डल और मानव जाति को प्रदूषण से बचाने के लिए हमें अपने क्षुद्र स्वार्थ को छोड़कर सर्वार्थ की बाँह थामनी होगी और पर्यावरण के भौतिक और जैविक स्वरूप को संरक्षित करने हेतु हमें वैश्विक उत्तरदायित्व के साथ पृथ्वी एवं सजीव जगत की विविधताओं का सम्मान करना होगा, भावी पीढ़ी हेतु प्रकृति की सुन्दरता एवं संसाधन को बचाये रखना होगा साथ ही उत्पादन, उपभोग व पुनुरुत्थान की पद्धति अपनानी होगी।<sup>4</sup>

2. **प्रदूषण स्थिति-** हम अपने और अपने जीवन में आये व्यक्तियों के साथ अधिक शान्ति और सम्बन्ध महसूस करते हैं। मनुष्य की मानसिकता के साथ पर्यावरण का एक निकट सम्बन्ध है। प्राचीन समय की सभ्यताओं में प्रकृति को सम्मान के भाव से देखा गया है, पहाड़, नदियाँ, वृक्ष, सूर्य, चन्द्र। जब हम प्रकृति और अपनी आत्मा के साथ अपने सम्बन्ध से दूर जाने लगते हैं, तब हम पर्यावरण को प्रदूषित करने लगते हैं और पर्यावरण का नाश करने लगते हैं। आज के जगत में ऐसे कई व्यक्ति हैं जो कि लालच वश जल्द मुनाफा और जल्द नतीजे प्राप्त करना चाहते हैं उनके कृत्य जगत के पर्यावरण को नुकसान पहुँचाते हैं। केवल बाहरी पर्यावरण ही नहीं, वे सूक्ष्म रूप से अपने भीतर और अपने आस-पास के

लोगों में नकारात्मक भावनाओं का प्रदूषण भी फैलाते हैं। इन नकारात्मक भावनाओं के कारण संघर्ष और युद्ध की परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं जिससे पर्यावरण को क्षति पहुँचती है। और उसे स्वस्थ करने में बहुत समय लगता है।

पिछले कुछ समय से दुनिया में पर्यावरण के विनाश को लेकर काफी चर्चा हो रही है। मानव की गतिविधियों के कारण पृथ्वी के वायुमण्डल पर जो विषैले प्रभाव पड़ रहे हैं, उनसे राजनेता, वैज्ञानिक, धर्मगुरु और सामाजिक कार्यकर्ता भी चिन्तित हैं। एक आम इन्सान को इसका बोध होने लगा कि प्रकृति को प्रत्येक दृष्टिकोण से नुकसान पहुँचाया गया है। जंगलों की अन्धाधुन्ध कटाई हो रही है, वाहनों से प्रतिदिन हजारों, लाखों टन धुआँ निकल रहा है जो हवा को प्रदूषित कर रहा है। कारखाने नदियों में जहरीला कचरा बहा रहे हैं, कुछ बड़े राष्ट्र समुद्र में परमाणु परीक्षण करके उसे विषाक्त बना रहे हैं। मनुष्य के स्वार्थ का ही नतीजा है कि प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है। गाँधी जी ने सही कहा है कि— प्रकृति प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूरा करती है लेकिन लोभ पूरा नहीं कर सकती।

इसलिए हमें पर्यावरण संरक्षण हेतु विशेष प्रयास करने पड़ेंगे। प्रयास के पूर्व पर्यावरण के भौतिक और जैविक प्रकारों को भी समझना पड़ेगा। भौतिक पर्यावरण के अर्न्तगत मिट्टी, वायु, तापमान, आर्द्रता, वर्षा, बर्फ, किसी स्थान की जलवायु आदि भौतिक पर्यावरण हैं इन सब में किसी भी प्रकार का प्रदूषण पर्यावरण को प्रदूषित कर देता है तो सम्पूर्ण प्राणी जगत संकट में पड़ जाता है। जैविक पर्यावरण के अर्न्तगत अनेक जीव आते हैं जो भौतिक पर्यावरण में रहते हैं। जीवों का आन्तरिक वातावरण भी इसके अर्न्तगत आता है। वृद्धि, विकास, प्रजनन आदि क्रियायें नियंत्रित रहती हैं, इस आन्तरिक वातावरण में कोई भी रूपान्तरण अन्तिम रूप से परिवर्तित करता है। सभी जीव तथा उनकी अर्न्तसम्बन्धी क्रियायें एवं प्रति क्रियायें, जो प्रत्येक जीव एक दूसरे पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्त करते हैं, जैविक पर्यावरण के अर्न्तगत आते हैं। पृथ्वी का अस्तित्व बचाने के लिए जल तथा पर्यावरण प्रदूषण को हर तरह से रोकना होगा नहीं तो लोगों के सामने इसका भयावह परिणाम आ सकते हैं।

भारत में कभी गाय के दूध की नदियाँ बहा करती थी या "गंगा तेरा पानी अमृत" ये पौराणिक आख्यान दशकों से मुम्बईया फिल्मों का स्थायी भाव बने हुए हैं जबकि गत 25 वर्षों में हरिद्वार पहुँचते ही गंगा का जल जहरीले रसायन में बदल चुका है तो कानपुर तक आते-आते गंगा किसी भी शहर के गन्दे नाले का रूप धारण कर चुकी है और गऊ माता कूड़े के ढेर में मुँह मार रही हैं। पर्यावरण विशेषज्ञ डॉ० अनीश बोरा के मुताबिक जापान में हिरोशिमा और नागासाकी परमाणु दुर्घटना के बाद वहाँ के पर्यावरण से न केवल कीटों की, बल्कि पेड़ पौधों की सैकड़ों प्रजातियाँ लुप्त हो गयीं। 05 नवम्बर 2001 को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने हर साल 06 नवम्बर को " इण्टरनेशनल डे फॉर प्रिवेंटिंग द एक्सप्लॉयटेशन ऑफ द एनवायरमेंट इन वार एंड आर्म्ड कॉन्फ्लिक्ट" के रूप में मनाने की घोषणा की थी। इसका उद्देश्य युद्ध और सशस्त्र संघर्ष के दौरान पर्यावरण को होने वाले नुकसान को रोकना था। विकास के पथ पर मानव जैसे-जैसे आगे बढ़ा है सीख की बहुत सी बातों को पीछे छोड़ता गया है। पर्यावरण के जितने भी प्रकार हैं उनको कैसे बचाया जाय यह समस्या आज भी ज्वलन्त है पर्यावरण संरक्षण हेतु निम्न प्रकार के कार्य आवश्यक रूप से किये जा सकते हैं।

3. वैश्विक उत्तरदायित्व— पर्यावरण संरक्षण किसी व्यक्ति या व्यक्तियों तक ही सीमित नहीं है इसका दायरा काफी विस्तृत है और सम्पूर्ण विश्व जगत को इसका उत्तरदायित्व उठाना पड़ेगा—

क. वृक्षारोपण कार्यक्रम— वृक्षारोपण कार्यक्रम को सभी के सहभागिता के साथ युद्ध स्तर पर चलाना चाहिए। परती भूमि, पहाड़ी क्षेत्र, ढलान क्षेत्र सभी जगह पौध रोपण आवश्यक है तभी अन्धाधुन्ध कट रहे वृक्षों का संतुलन सही होगा क्योंकि वन सम्पदा पर्यावरण के लिए आवश्यक है।<sup>5</sup>

ख. उत्पादन उपभोग और पुनरुत्पादन की ऐसी पद्धति अपनाना जिससे पृथ्वी की उपजाऊ शक्ति बनी रहे—

1. उत्पादन उपभोग के दौरान काम आने वाले सभी साधनों का उपयोग हो सके और इस दौरान जो अवशेष निकले वह प्रकृति के लिए नुकसान पहुँचाने वाला सिद्ध न हों।
2. हमें उन तकनीकों के विकास, प्रयोग और प्रचार को महत्त्व देना होगा जो पर्यावरण की रक्षा में उपयोगी हों।
3. हमें ऐसी जीवन पद्धति को चुनना होगा जो हमारे जीवन स्तर को बेहतर बनाये और प्रकृति की रक्षा भी करे।
4. उर्जा के प्रयोग में सावधानी बरतनी होगी।<sup>6</sup>
5. डिस्पोजल गिलास, नैपकिन, रेजर आदि का दोबारा उपयोग किया जाना चाहिए क्योंकि इसका दुष्परिणाम पर्यावरण पर पड़ता है।

ग. भावी पीढ़ी हेतु पृथ्वी की सुन्दरता और उसके संसाधनों को बनाये रखना—

1. हमारा प्रत्येक कार्य आने वाली पीढ़ी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए होना चाहिए तथा हमें उन सभी योजनाओं और नियमों को अपना लेना चाहिए जो हमारे विकास में सहायक हैं तथा जिनसे पर्यावरण की रक्षा होती है।<sup>7</sup>

2. जल, मिट्टी वन सम्पदा, समुद्री प्राणी, ऐसे संसाधन हैं जिन्हें कई बार प्रयोग में लाया जा सकता है लेकिन इनका प्रयोग समझदारी पूर्ण ढंग से हो जिससे कि ये न तो नष्ट हों न पर्यावरण को कोई नुकसान हो।

घ. पर्यावरण संरक्षण हेतु अन्य महत्वपूर्ण कार्य—

1. भू-जल संरक्षण हेतु प्रयास करना।
  2. दैनिक उपयोग में पालीथिन का बहिष्कार करना।
  3. कूड़े-कचरे को एक स्थान पर इकट्ठा कर जला देना या मिट्टी में दबा देना।
  4. आस-पास के वातावरण को स्वच्छ रखना।
  5. कागज की कम से कम खपत करना।
3. **निष्कर्ष**— पर्यावरण प्रबंधन में प्रदूषण नियंत्रण शब्द का उपयोग किया जाता है। पर्यावरण प्रदूषण को पुनःचक्रित, पुनःउपयोग, कचरा प्रबंधन, लघुकरण, रोककर, खाद के द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। वायु प्रदूषण नियंत्रण जैसे तापीय ऑक्सीकरण यंत्र के द्वारा भी किया जाता है।

सन्दर्भ

1. दैनिक भास्कर, 22 अप्रैल, 2007।
2. क्लीयर ओशीन फाउन्डेशन, 2001, रिट्राइब्ड 2006-02-14
3. मेरियम.वेबस्टर.कॉम.2010-08-13, रिट्राइब्ड 2010-08-26
4. सिंह, एम0 पी0(2014) पर्यावरण प्रदूषण, अनुसंधान विज्ञान शोध पत्रिका, खण्ड-2, अंक-1, मु0पृ0 192-203।
5. हरी भूमि, 08 नवम्बर, 2010।
6. पर्यावरण ऊर्जा टाइम्स, मार्च 1999, पृ0-37।
7. पर्यावरण विमर्श-डॉ0 सविता मिश्रा।